भारतीय समाज और साहित्य में महामारी

संपादक
डॉ. मीनाक्षी
डॉ. शीला आर्या

सिद्धार्थ बुक्स
रामनगर एक्सटेंशन, डॉ. आंबेडकर गेट
शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 9810173667, 9810123667
ई-मेल :- siddharthbooks78@gmail.com
वेब साइट :- www.gautambookcenter.com

मूल्य : 500/-

© सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2022
आई.एस.बी.एन. : 978-93-93679-17-8

मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स : गौतम क्रिएशंस, शाहदरा, दिल्ली
मुद्रक : आर.के. प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली

अनुक्रम

संपादकीय 11

खंड 'क' : लेख

महामारी समाज और साहित्य 33
तेजेंद्र शर्मा

कोरोना, समाज और साहित्य 41
अर्चना पैन्यूली

महामारियों का इतिहास और बदलती वैश्विक कूटनीति 51
डॉ. प्रेम प्रकाश

उपनिवेश में महामारी और स्त्रियाँ 59
सुजीत कुमार सिंह

कोरोना संकट में प्रभुवर्ग से प्रत्याशा 71
एच.एल. दुसाध

वैश्विक महामारी के दौरान ग्रामीण अर्थव्यवस्था 98
डॉ. तरुणा यादव

साहित्य और समाज में महामारी का प्रश्न 107
डॉ. संतोष कुमार

महामारी के इस काल में साहित्य का स्वरूप 115
डॉ. नेहा कल्याणी

महामारी के इस काल में साहित्य का स्वरूप

डॉ. नेहा कल्याणी

वर्तमान समय अपनी संवेदना को जीवंत रखने का चुनौतीपूर्ण समय है। मानवीय अस्मिता के लिए लड़ने के संकल्प का सामाजिक यथार्थ के संदर्भ में उसके युगीन-बोध, लोक-संपृक्ति, वर्तमान सभ्यता की विसंगतियाँ, मानव-मूल्यों का परिकलन और नवीनता के द्वार खटखटाती हुई जिजीविषा की नई उड़ान तथा नवोन्मेष संभावनाएँ, निश्चित रूप से उसके आग्रह को और अधिक सशक्त तथा कारगर बनाने के प्रयोजन हैं। समाज सामाजिक सरोकारों को निभाते-निभाते संत्रास, त्रासदी, ऊहापोह, आपाधापी, मशीनीकरण, रिश्तों की टूटन-क्षरण के बीच से गुज़र रहा है। इस त्रासदी के सर्जक कोविड-19 इस शब्द से आज के समय में कोई भी अपरिचित नहीं है। विश्व की खुशियों को निगलने वाला इस अदृश्य दानव कोरोना ने विश्व को जिस कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी।

21वीं शताब्दी में विकास के शिखर पर खड़े मानव ने स्वयं को प्रकृति का स्वामी होने की घोषणा कर दी थी। समस्त पृथ्वी को अपनी स्वार्थ-लिप्सा से रौंदते हुए अंतरिक्ष, चंद्रमा और मंगल को जीतने की तैयारी में लगे मानव-जाति को एहसास हो गया कि वो प्रकृति का स्वामी नहीं एक अदना-सा सेवक ही है।

'वसुधैव कुटुंबकम्' और 'अतिथि देवो भवः' जैसे सिद्धांतों के अनुयायी भारतीय जनमानस ने वर्तमान युग में पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करते हुए स्वयं को पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंग लिया था। साहित्य और किताबें कहीं हाशिये में सिसक रही थीं। भले ही मानव साहित्य को उपेक्षित व तिरस्कृत कर दे, किंतु

साहित्य कभी भी अपने लक्ष्य को नहीं भूला, सदैव ही साहित्य ने पथ भटके मानव को राह दिखाई, उसके हित को साधने का प्रयास किया।

इस कोरोना नामक दानव के दानवता काल में जब हम अंदर और बाहर दोनों ओर से जिजीविषा से जूझ रहे है, भय और तनाव ने हमारी अंतरात्मा को कँप-कँपाकर रख दिया है ऐसे समय में जब मानव की शारीरिक शक्ति की अपेक्षा आंतरिक शक्ति व सकारात्मक विचार ही इस अदृश्य दानव से लड़ने की ताकत दे सकता है। ऐसा विचार कर मानव फिर से साहित्य और किताबों की शरण में आया। कोरोना ने मानव-जाति के हर क्षेत्र को प्रभावित किया हैं, चाहे वह आर्थिक क्षेत्र हो, सामाजिक क्षेत्र हो या पारिवारिक। किंतु इस महामारी के काल की एक अच्छी बात यह है कि हम सीमित संसाधनों में जीना सीख गए। परिवार, व्यायाम एवं स्वयं का महत्व जान गए हैं। मानव समझ गया कि बाहरी सुंदरता या बलिष्ठता नहीं, अपितु मानसिक शक्ति, रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति ही विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष कर सकती है।

21वीं शताब्दी तकनीक की अतिवादिता का युग है। आज का मानव तकनीक का गुलाम है। जिस देश के सपूत कहते थे– 'सर कटा सकते हैं, लेकिन सिर झुका सकते नहीं।' उसी देश के युवा आज यह मानते हैं कि सिर झुका सकते हैं, लेकिन सर उठा सकते नहीं। आपको इन पंक्तियों को पढ़कर शायद आश्चर्य हो, पर आज के युग का यही कटु सत्य है कि जिधर नज़र दौड़ाओ, उधर युवा, बच्चे और हर इंसान मोबाइल में डूबा नज़र आता है, सिर उठाकर आस-पास देखना शायद उसका अपमान है। अपनी व्यस्त दिनचर्या में से भी समय-समय पर कुछ क्षण चुराकर अपने मोबाइल पर नज़र डालकर इतराने वाली युवा पीढ़ी का भी इससे मोहभंग हो चुका है। वह जान गई है कि मोबाइल का उपयोग गेम, फेसबुक व व्हाट्सएप के अतिरिक्त भी हो सकता है। कोविड-19 के कारण जब पूरा विश्व लॉकडाउन तत्पश्चात अनलॉक की स्थिति से गुज़र रहा है, उस समय विश्व पर क्या प्रभाव है। इस स्थिति का विश्लेषण

करना आवश्यक है।

साहित्य और समाज सदैव से ही परस्पर अभिन्न मित्र रहे हैं। समाज का दुख-सुख, उतार-चढाव साहित्य के केंद्र में रहे हैं। महामारियों के कथानक पर केंद्रित अतीत की अनेक साहित्यिक रचनाएँ मानव को जिजीविषा की प्रेरणा देने के साथ ही नैतिक मूल्यों के ह्रास, अहंकार, अन्याय और नश्वरता से भी आगाह करती है। 'साहित्य समाज का दर्पण है' इस कथ्य को चरितार्थ करते हुए अनेक लेखकों, कवियों, व्यंग्यकारों ने अपनी लेखनी से इस महामारी को शब्दबद्ध करने का प्रयास किया है। साहित्य अपने समय की विसंगतियों, गड़बड़ियों और सामाजिक द्वंद्वों को रेखांकित करता है। इस संकट काल को अनेक युवा चित्रकारों ने अपनी तूलिका से इसे शब्दों के रंगों से सजाया है। साहित्य समाज के लिए सांत्वना, धैर्य और साहस का स्रोत भी बनी है तो दुखों व सरोकारों को साझा करने वाला एक ज़रिया भी। इस संकटकाल में लिखा गया साहित्य एक विशिष्ट मानवीय दस्तावेज़ भी है। स्वार्थ, महत्त्वाकांक्षाओं व विलासिताओं के कोटर में गर्वोन्मत हुए मानव की अभिलाषाओं को एक अदृश्य दानव किस प्रकार तहस-नहस कर सकता है, यह तथ्य वर्तमान समय में अनेक साहित्यिक कृतियों में संकेतित किया गया है।

जहाँ साहित्य में एक ओर समाज को सहृदय बताया जाता है, वहीं दूसरी ओर हमें उसकी हृदयहीनता के चित्र भी मिलते हैं– प्रवासी मज़दूरों की वापसी, निर्धन-वर्ग का भोजन व आजीविका के लिए क्रंदन, इन मार्मिक विषयों पर निश्चित रूप से शीघ्र ही अनेक सुंदर कृतियों का सृजन होगा। अनेक कवि, लेखक, आलोचक आनॅलाइन, फेसबुक एवं सोशल मीडिया के ज़रिये कोराना प्रभावित अपने विचारों, रचनाओं को साझा कर रहे हैं। यद्यपि इस यात्रा में प्रकाशित हो जाने की हड़बड़ी और होड़ भी दिखाई दे रही है। हिंदी कवि संजय कुंदन कहते हैं कि– "हो सकता है जो आज सोशल मीडिया पर शेयर किया जा रहा है वो साहित्य की कसौटी पर खरा न उतरे और गुणवत्ता में कमतर रह जाए, लेकिन निश्चय

ही उन्हीं के बीच से ऐसी रचनाएँ भी उभरकर आगामी में संघर्ष, यातना और संशय के घटाटोप से जटिलताओं वाले समय की सबसे प्रखर और कहलाने योग्य होंगी।

इंडिया टुडे और आज तक समूह के साहित्य के लिए डिजिटल चैनल साहित्य तक ने 'कोरोना और किताब' शुरू की है, जिसके माध्यम से अनेक लेखक पाठकों साहित्यिक कृतियों का पाठन सुना रहे हैं। यह डिजिटल मंचों पर इसका प्रसारण कर रहा है जिससे समाज भय अथवा आतंक के साये से मुक्त होकर जीवन जी सके। यह साहित्यिक प्रक्रिया उन्हें के एहसास के साथ ही सकारात्मकता भी प्रदान कर देश-विदेशों से लोग इस शब्द-प्रक्रिया के माध्यम से

कोविड-19 के इस संकट काल में लॉकडाउन के दैनिक जीवन कुछ अस्थिर अवश्य हो गया है, किन्तु इस संकट काल का प्रभाव हर क्षेत्र पर अलग-अलग है। आर्थिक, व्यावसायिक क्षेत्र जहाँ अव्यवस्थित हो गए हैं, एवं रिश्ते वहीं मज़बूत हुए हैं। इंसान को खुद के लिए लगा है। वह अपने और परिवार के महत्त्व को समझने विस्तृत स्तर पर होने वाली साहित्यिक गतिविधियों सम्मेलनों आदि पर भी रोक लगी है। पर साहित्यकारों विकल्प खोजकर नई तकनीक को अपनाया है। प्रमाणित कर दिया है कि कथा-कहानियों की भाषा हिंदी किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति के आने पर भी मानती। महामारी के इस काल में कला-साहित्य प्रेमियों की आनॅलाइन सज रही हैं। इस प्रणाली से देश-विदेशों से साहित्यिक महफ़िलों से जुड़े लोग साहित्यिक केवल रसास्वादन कर रहे हैं, अपितु स्वयं भी साहित्य रहे हैं। यदि हमें समाज को बदलना है तो नए संरचना करने का प्रयास करना होगा। मानव व्यवहार

है वह परिस्थितियों और कालक्रम के अनुसार बदलता रहता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन
2. प्रो. शिवशंकर झकरकट्टी, हिंदी साहित्य के विविध आयाम, विकास प्रकाशन, कानपुर
3. डॉ. कल्पना देशपांडे, हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, विकास प्रकाशन, कानपुर
4. स्वामी जगन्नाथ, जीना सीखो
5. डॉ. प्रमोद शर्मा, साहित्य और उसके सामाजिक सरोकार, विकास प्रकाशन, कानपुर